अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

हिंदी प्रदेश का नवजागरण और भारतेंदु हरिश्चंद्र

डॉ.संतोष रोड़े, पोस्ट डाक्टरल फेलो
प्रा.रामकृष्ण मोरे महाविद्यालय ,पुणे

भारतीय नवजागरण बहुपरतदार हैं इसमें कहीं सुधारवाद की प्रधानता हैं,कहीं राष्ट्रिय जागरण की,तो कहीं दलित चेतना की हैं| पुनरुत्थान का स्वर किसी न किसी रूप में कहीं कम कहीं ज्यादा हर जगह मौजूद हैं| भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी नवजागरण के प्रधान अग्रदूत माने जाते हैं| उन्होंने बंगला नवजागरण से प्रेरणा ली थी किन्तु उनकी नवजागरण की कल्पना बांग्ला नवजागरण तक सीमित नहीं हैं|भारतीय प्रान्तों की तरह हिंदी क्षेत्र में भी 19वीं सदी में नये ढंग की शिक्षा और पत्रकारिता का उदय हो रहा था| नई - नई साहित्यिक गतिविधियों से एक नये युग की शुरुआत हो रही थी, भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी ने की उन्नति में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी उनका का साहित्य एक ऐसे काल की उपज है,जिसके एक छोर पर भारतीय किसानों तथा सिपाहियों का राष्ट्रिय विद्रोह हैं और दूसरे छोर पर ह्युम के नेतृत्व में राष्ट्रिय कांग्रेस का जन्म | भारतीय नवजागरण की खासियत यह है कि यूरोपीय संपर्क से हासिल आधुनिक ज्ञान- विज्ञान आत्मसात करके भारतीय समाज को एक आधुनिक समाज बनाने की कोशिश की है| 19 सदी में नवजागरण की चेतना फ़ैलाने में शिक्षा की भूमिका सबसे बुनियादी थी| भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को व्यापक अर्थो में राष्ट्रिय नवजागरण मानना होगा यह दासता से मुक्ति का आन्दोलन था | नवजागरण के आंदोलन का पहला कदम था फिरंगी हुकमत से आजादी | इस आंदोलन के दो पक्ष थे एक राजनीतिक पक्ष और दूसरा समाजसुधार का, तत्कालीन भारतीय समाज में रूढ़ियाँ ,परम्पराए, जातीयता ,और पाखंड समाज में व्याप्त था| हिंदी क्षेत्र में मूलतः पुनर्जागरण की शुरुआत 1857 ई. के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से मानी जाती है,सामाजिक क्षेत्र में पुनर्जागरण का आरंभ प्रमुखतः आर्य समाज की स्थापना और उसके आन्दोलन के साथ हुआ |

भारतेंदु हरिश्चंद्र के समकालीन रचनाकारों में राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद ,बालकृष्ण भट्ट ,प्रतापनारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन, ठाकुर जगमोहन सिंह, अम्बिका दत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी आदि रहे जो भारतेंदु के मृत्यू के बाद भी विविध ढंग से सक्रीय थे|इन सभी का हिंदी भाषा के विकास शिक्षा आधुनिक साहित्य की रचना और पत्रकारिता के उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं| पुनर्जागरण 1860 के आसपास शुरू हुआ, वही हिंदी क्षेत्र में यह प्रक्रिया कुछ बाद आरंभ हुई |भारतीय नवजागरण में इस देश की परम्पराओं का बड़ा योगदान रहा है| महाराष्ट्र में रानडे और म.फुले ने शिवाजी महाराज से प्रेरणा ली| महात्मा फुले बुद्ध से प्रभावित थे | यह भी कहा जाता हैं कि भक्ति

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

आन्दोलन का आत्मपरिष्कार नवजागरण में सामाजिक सुधार बना भक्ति आन्दोलन धार्मिक रुढियों पाखंडों और भेदभाव से मुक्ति वैश्विक प्रेम सदाचरण सादगी के आदर्श हैं| नवजागरण काल में भारतीय सुधारकोने इन आदर्शो को समाज में स्थापित करने के लिए समाज से लोहा लिया, भक्ति आंदोलन और नवजागरण को अलग करके नहीं देखा जा सकता |धार्मिक आडम्बरों के विरोधी कबीर जब कहते है " संतो भाई आई ज्ञान की आंधी रे या जब तुलसी आपसी वैर छोड़ने का आवाहन करते हुए कहते हैं वयरु न कर काहू सां कोई"1 उन कवियों की भक्ति में अध्यात्मिक अनुभूति के साथ मानवप्रेम की नई कल्पना वैयक्तिकता और सामाजिक सुधार की प्रवृति थी यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि भक्ति आन्दोलन की परम्परा में आगे ऐसे कवि और सुधारक कवि हुए जो पिछड़े वर्ग में सामाजिक जागृति कर रहे थे सतनामी सम्प्रदाय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी |तत्कालीन समय में औरंगजेब के अत्याचार समाज में बढ़ रहे थे इस सम्प्रदाय के लोगों ने इसका खुलकर विरोध किया है |साथ ही साथ छतीसगढ़ के गुरु घासीदास निचले तबको में समाजसुधार का काम कर रहे थे उनका कहना था " मन के भीतर ही मंदिर है और अपन घट ही के देवला मनाबो मंदिरवा में का करे जाबो"2 वे कहते है कि हमारे मन के भीतर ही मंदिर स्थित हैं अन्य मंदिरों में जाने की आवश्यकता है| भारतीय नवजागरण में एक साथ कई विचारधाराए काम कर रही थी|हिंदी क्षेत्र में साम्प्रदायिक भाईचारे को मजबूत बनाते हुए अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ 1857 का पहला स्वाधीनता संग्राम चला इसी समय महाराष्ट्र में बंगाल के तर्ज पर ब्राह्मणवाद से विद्रोह था दलितों का जागरण नवजागरण था|

हिंदी क्षेत्र में अलग - अलग रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाजसुधार पर लिख रहे थे उसमें भारतेंदु आधुनिक शिक्षा, औधोगिकरण ,वैज्ञानिक प्रगति और समाजसुधार का महत्व बत्ताते है| भारतेंदु द्वारा प्रकाशित तदीय समाज और बंगाल का हिंदू मेला उस समय स्वदेशी चेतना जगाने का काम किया हैं तत्कालीन समय में छोटी बड़ी तिनसों से आधिक पत्रपत्रिकाएं प्रकाशित हुई थी इन पत्र पत्रिकाओं में मुख्य रूप से स्वदेशी और स्वराज्य की चेतना का स्वर मुखरित हुआ युगप्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र की मृत्यु केवल 34 वर्ष की आयु में हुई ,किन्तु इतने कम समय में जिस कुशलता से उन्होंने हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता को प्रतिष्ठीत किया और राष्ट्रिय चेतना की अलख जगाई उसकी कोई मिसाल नहीं| भारतेंदु की दो कवितायें विजय वल्लरी तथा विजयिनी विजय वैजयंती इन दो कविताओं में दुःख, कष्ट का वर्णन हैं लेकिन उसमें दुखड़ा रोया नहीं यह कविताए ऐतिहासिक गौरवगाथाये हैं, यह कविता यह सन्देश देती है कि भारत का इतिहास रोकर दुखड़ा सुनाने का नहीं संघर्ष का इतिहास हैं| "विजय वल्लरी अफगान युद्ध समाप्त होने पर और विजयिनी विजय वैजयंती मिस्त्र विजय के बाद लिखी गयी थी दोनों कविताओं का मूल लक्ष्य राजभक्ति प्रदर्शन नहीं ,बल्कि राजभक्ति की ओट में अंग्रेजी के शोषण -अत्याचार को उद्घाटित करना है,भारतीय संघर्ष की वीरतापूर्ण

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

ऐतिहासिक परंपरा को उजागर करते हुए अंडरग्राउंड रूप से भारतवासियों को ललकारना हैं उपर्युक्त दोनों वस्तुत ओपनिवेशिक सुधारों से मोहभंग की कविताए हैं"3 विजयिनी विजय वैजयन्ती में भारत की दुःख भरी हालात का वर्णन किया है| इस कविता में राजभक्ति के समानंतर उस समय औपनिवेशिक आतंकवाद का नग्न यथार्थ व्यक्त किया :

कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जन -बल नासी|
जिन भय सिर न हिलाइ सकत कहूँ भारतवासी ||

उन्होंने सिपाही विद्रोह को गलत नहीं बताया बल्कि यह कहा कि यह काम कितना कठिन काम था| जो भारत में जग में रहयों सब सों उत्तम देस |ताहि भारत में रहयों अब नहीं सुख को लेस अंग्रेज राज में सुख लेशमात्र नहीं यह भारतेंदु बता रहे हैं उन्होंने बार - बार कहा सोई भारत भूमी भाई सब सब भांति दुखारी कहाँ मिस्त्र विजय का अभिनंदन ,कहा इसमें आकर जुड़ गया भारत का दुःख इस कविता में भारतेंदु ने पंचनद,पानीपत तथा चितौड को आवाहन करते हुए कहा – भारत आज मजधार में खड़ा हैं रामचंद्र शुक्ल ने इस अंश पर बहुत भावविभोर होकर लिखा हैं," क्योंकी भारत के वर्त्तमान दुखों के वर्णन के साथ अतीत के गौरव को इस तरह याद करना नवजागरण की प्रवृति हैं इसे यह कहकर नकार देना कि इन स्मृतियों का संबंध हिंदू गौरव और पुनरुत्थानवाद से हैं उस युगबोध की सीमायों को न समझना है"4 उपर्युक्त कविता का अंत इस कथन से हैं ब्रिटिश डंके की धुन चारों और छा गई भारतेंदु इस कविता में हनुमान, अर्जुन, भीम, अभिमन्यु, पृथ्वीराज आदि की वीरता का गुण गौरव ही नहीं करते बल्कि अंग्रेजों से लोहा लेनेवाले पंजाब के निडर रणजीत सिंह तक पहुँचते है किंतु अंतिम नरवीर रणजीत सिंह भूपाल का नाम ले रहे है| उनके लेखन में भी धीरे धीरे एक नया उभार आता हैं उनके साहित्यिक विकास में 1881 – 84 के काल का विशेष महत्व रहा है देश अकाल से त्रस्त था|

हिंदी की उन्नति से भारतेंदु का तात्पर्य केवल हिंदी भाषा की उन्नति नहीं सिर्फ साहित्य की उन्नति भी नहीं हैं इस मामले में वे संकीर्ण नहीं थे कविता में उन्होंने हिंदी समाज लोगों को तकनिकी ज्ञान आत्मसात करने को कहते हैं रेल, तार, वस्त्र, कागज आदि के संबध में जानकारी होनी चाहिए अन्यत्र उनकी एक मुख्य चिंता हैं ,हम लोगों को अंग्रेजी भाषा प्राप्त हुई ,परन्तु कला ,कौशल के विषय में हम लोग अज्ञान के सागर में निमग्न हैं वे ये भी कहते " अफ़सोस तुम ऐसे हो कि अपने निज काम की वस्तु नहीं बना पाते, भारतेंदु राजनीतिक जागरूकता चाहते ,राजनीति समझे सकल पावहि तत्व विचार वे निश्चय ही हिंदी भाषा को परिमार्जित करने समाचार पत्रों की उन्नति और विविध विषयों की पुस्तके छपवाने की बात करते हैं वे वैर विरोधहि छाड कै छते है कि हिंदी प्रदेश ज्ञान विज्ञान में उन्नति करें एक जगह यह भी स्पष्ट कर देते है कि हिंदी बुध्दिजीवियाँ को अंग्रेजी – परजिवी होकर नहीं रह जाना हैं वे चेतावनी देते हैं ,परदेसी की बुद्धि अरु वस्तुन की करी आस,परबस हवै कब लो कहो रहिहो

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

तुम हवै दास, कब तक गुलाम बने रहोगे यह उस युग का एक बड़ा प्रश्न है जो अन्यत्र प्रान्तों में बहुत कम उठाया गया"5 भारतेंदु तहे दिल से सिर्फ हिंदी ही नहीं पूरे हिंदी समाज की उन्नति चाहते थे क्योंकी इसके बिना हिंदी की उन्नति नहीं ,हो सकती थी| भारतेंदु उदार व्यक्तिमत्व के धनी साहित्यकार थे, उन्होंने गोहत्या के नहीं जीवहत्या मात्र के विरोधी थे वैष्णव होने की वजह से यह स्वाभाविक था "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति का मुख्य विषय मांसाहार और नशे का विरोध है इन मुद्दों को केंद्र में रखकर लिए हुए उपर्युक्त नाटक में हिंदू धर्म ,पुरोहित वर्ग ,नशे की पश्चिमी हवा और अंग्रेजी राज के प्रशंसको की जमकर आलोचना जिस तरह की गई हैं ,उससे नहीं लगता कि भारतेंदु सिर्फ हिंदू थे ,वे हिंदू परम्परा से ही अपनी सारी बौद्धिक खुराक ले रहे थे और पवित्र काशी के धार्मिक प्रवक्ता थे"6 भारतेंदु के सामने एक बहुत बड़ा वर्ग था ,जिसमे हिंदू और मुसलमान दोनों थे| भारत दुर्दशा की तुलना में वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति एक साधारण नाटक था इससे स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु पाखंड पुरोहितवाद और उपनिवेशवाद की आलोचना करने का मौका कभी नही गंवाते |1905 में बंग - भंग हुआ था इसके विरोध में मानो स्वदेशी आन्दोलन शिखर पर था अंदर ही अंदर पूरे देश में स्वदेशी चेतना की लहर उत्पन हो गयी थी स्वावलंबन और पूर्ण स्वराज्य की चर्चा होने लगी थी भारतेंदु स्वदेशी आन्दोलन के कितने हिमायती थे ,इसका अंदाजा उनके निम्नलिखित कथन से लगाया जा सकता हैं देशवासियों को अपील करते हैं "जिसमें तुम्हारी भलाई हो ,वैसी ही किताब पढो वैसे ही खेल खेलो ,वैसी ही बातचीत कारो ,परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो अपने देश में अपनी भाषा की उन्नति करो"7 23 मार्च 1874 की कविवचन सुधा में भारतेंदु ने एक प्रतिज्ञा पत्र प्रकाशित किया था जो उनके स्वदेश प्रेम का परिचय देता हैं उन्होंने लिखा था "हम लोग सर्वातयामी सब स्थान में वर्तमान सर्वद्रष्टा और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं कि और सीखते हैं कि हम लोग आज के दिन कोई विलायती कपडा नहीं पहनेगे और जो कपडा कि पहले से मोल ले चुके हैं और आज तक हमारे पास हैं उनको तो उनके जीर्ण होने तक काम में लावेंगे पर नविन मोल लेकर किसी भांति का भी विलायती कपड़ा पहिरेंगे हम आशा करते हैं कि प्राय:सब लोग स्विकार करेंगे और अपना नाम इस श्रेणी में होने के लिए श्रीयुतबाबु हरिश्चंद्र को अपनी मनीषा प्रकाशित करेंगे और सब देसी हितैषी इस उपाय से वृद्धी में अवश्य उद्धोग करेंगे"8 अंग्रेजो द्वारा प्रथम स्वाधीनता संग्राम को जिस निर्ममता के साथ कुचला गया था,उसने पूरे देश में निराशा का वातावरण बना दिया था ब्रिटिश सरकार ने इन स्थितियों का पूरा लाभ उठाकर भारत का आर्थिक शोषण और तेज कर दिया

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी की उन्नति में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी|उनका साहित्य एक ऐसे काल की उपज है जहाँ एक छोर पर भारतीय किसानों तथा सिपाहियों का राष्ट्रिय विद्रोह दिखाई देता है तो दुसरे छोर पर राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म इस परिप्रेक्ष्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्य का मूल्याकंन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

करते समय सवाल खड़ा होता है 1857 **की चेतना या उसका विकास| भारतेंदु की रचनाओं में देशकाल**, **राष्ट्रिय जनजागरण और सुधारवाद की प्रधानता दिखाई देती है| भारतेंदु हरिश्चंद्र को** 34 **वर्ष की अल्पायु मिली थी किन्तु उनका रचना संसार अदिव्तीय रहा है|भारतेंदु उपनिवेशवाद की आलोचना करते हुए वस्तुत**: **राष्ट्रिय जागरण की एक ऐसी व्यापक विचारधारा की ओर बढ़ रहे थे जिसका सम्बन्ध** 19 **सदी के सांस्कृतिक पहचान के संघर्ष से है |**

संदर्भ

1)**भारतीय नवजागरण एक असमाप्त सफ़र पृ**.19 **शंभूनाथ**

2) **वहीँ** **पृ**. 19

3) **वहीँ** - **पृ**. 260

4) **वहीं** **पृ**. 262

5) **हिंदी नवजागरण भारतेंदु और उनके बाद पृ**. 59 **शंभूनाथ**

6) **वहीँ** **पृ**. 53

7) **साहित्य अमृत अगस्त** 2016 **पृ**.70

8) **वहीँ** **पृ**.70